भारतीय विद्यालय डारसेट

हिंदी विभाग

पाठ: तीसरी कसम के शिल्पकार शैलद्र कायपत्रिका को तिथि: ----------

संसाधन व्यक्ति: श्रीमती बीना स्टीफन तिथि:----------

विद्यार्थी का नाम : कक्षा ----------: X ब

प्रश्नोत्तर

प्र1. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म को कौन-कौन-से पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है ?

उ1. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म को राष्ट्रपति स्वण पदक मिला, बंगाल फ़िल्म जनलिस्ट एसोसिएशन ने सवश्रेष्ठ फ़िल्म का पुरस्कार दिया और मॉस्को फ़िल्म फेस्टिवल म भी यह फ़िल्म पुरस्कृत हुई।

प्र2.शैलद्र ने कितनी फ़िल्म बनाईं ?

उ2.शैलद्र ने एक ही फ़िल्म बनाई थी – तीसरी कसम।

प्र3.राकपूर द्वारा निदशित कुछ फ़िल्मों के नाम बताइए।

उ3.राकपूर द्वारा निदशित कुछ फ़िल्मों के नाम ह- मेरा नाम जोकर, सत्यम शिवम सुंदरम और संगम।

प्र4. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म के नायक व नायिकाओं के नाम बताइए और फ़िल्म म इन्होंने किन पात्रे का अभिनय किया है ?

उ4. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म के नायक का नाम है – राजकपूर। उसने हीरामन नामक गाड़ीवान का अभिनय किया। नायिका वहीदा रहमान ने नौंटकी कलाकार हीराबाई का अभिनय किया।

प्र5.फ़िल्म 'तीसरी कसम ' का निमाण किसने किया था ?

उ5. फ़िल्म 'तीसरी कसम ' का निमाण प्रसिद्ध गीतकार शैलद्र ने किया था।

प्र6.राजकपूर ने ' मेरा नाम जोकर 'के निमाण के समय किस बात की कल्पना भी नहीं की थी ?

उ6. राजकपूर ने ' मेरा नाम जोकर 'के निमाण के समय इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि इसका एक भाग बनाने म ही छह वर्षों का समय लग जाएगा।

प्र7.राजकपूर की किस बात पर शैलद्र का चेहरा मुरझा गया ?

उ7.जब 'तीसरी कसम ' फ़िल्म म अभिनय करने के लिए राजकपूर ने अपना पारिश्रमिक एडवांस माँग लिया तो शैलद्र का चेहरा मुरझा गया।

प्र8.फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को किस तरह का कलाकार मानते थे ?

उ8.फ़िल्म समीक्षक राजकपूर को आँखों से बात करने वाला कलाकार मानते थे।

प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों म)लिखिए –

प्र1.'तीसरी कसम ' फ़िल्म को सैल्यूलाइड पर लिखी कविता क्यों कहा गया है ?

उ1.'सैल्यूलाइड ' एक तकनीकी शब्द है जिसका अथ होता है – किसी दृश्य को हू-ब-हू कैमरे म उतार देना, उसका चित्रांकन कर देना । जिस प्रकार कविता को पढ़कर और समझकर पाठक आनंद का अनुभव करता है वैसे ही 'तीसरी कसम ' फ़िल्म को देखकर यह नहीं लगता कि कोई फ़िल्म देखी जा रही है, बल्कि ऐसा लगता है मानो कविता पढ़ी जा रही हो ।

प्र2. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म को खरीददार क्यों नहीं मिल रहे थे ?
उ2. 'तीसरी कसम ' फ़िल्म म कोई लोक-लुभावन मसाला नहीं था। वह शुद्ध रूप से साहित्यिक थी ।उसम करुणा का भाव बहुत गहरा था । फ़िल्म के वितरक उसके साहित्यिक महत्त्व और गौरव को समझ नहीं सकते थे । इसलिए उन्होंने उसे खरीदने से इनकार कर दिया।

प्र3.शैलद्र के अनुसार कलाकार का कतव्य क्या है ?
उ3.शैलद्र के अनुसार ,कलाकार का कतव्य है कि वह दशकों को रुचि के अनुसार ढलकर स्वयं को उथला और सस्ता न करे ।वह यथासंभव दशकों को रुचियों को सँवारे, उनका परिष्कार कर ।

प्र4.फ़िल्मों म त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई क्यों कर दिया जाता है ?
उ4.फ़िल्मों म त्रासद स्थितियों का चित्रांकन ग्लोरिफ़ाई इसलिए कर दिया जाता है ताकि दशक उन्ह देखने को लालच म फ़िल्म देखने आएँ और फ़िल्म खूब बिके ।

प्र5.'शैलद्र ने राजकपूर को भावनाओं को शब्द दिए ह 'इस कथन से आप क्या समझते ह? स्पष्ट कीजिए ।
उ5.राजकपूर एक बहुत अच्छे अभिनेता थे तो शैलद्र कवि-हृदय । शैलद्र के लिखे अनेक गानों पर राजकपूर ना जानदार अभिनय किया था ।राजकपूर के मन को बातों को और भावनाओं को शैलद्र अच्छी तरह जानते थे, दोनों मित्र थे । शैलद्र राजकपूर को भावनाओं के अनुरूप ही गीतों को रचना करते थे। यही कारण है कि लेखक को यह कहना पड़ा कि शैलद्र ने राजकपूर को भावनाओं को शब्द दिए ह।
प्र6.लेखक ने राजकपूर को एशिया का सबसे बड़ा शोमैन कहा है ।शोमैन से आप क्या समझते ह ?
उ6.शोमैन का अथ है –अपनी फ़िल्मों को पूरी भव्यता के साथ प्रदर्शित करनेवाला। ऐसा व्यक्ति जो अपनी कला, गुण ,व्यक्तित्व तथा आकषण के कारण सब जगह प्रसिद्ध हो । उन दिनों राजकपूर भारत के ही नहीं, पूरे एशिया के ऐसे लुभावने प्रतिनिधि थे। प्र7.फ़िल्म 'श्री 420' के गीत 'रात दसों दिशाओं से कहगी अपनी कहानियाँ ' पर संगीतकार जयकिशन ने आपत्ति क्यों को ?
उ7. 'श्री 420' के गीत 'प्यार हुआ, इकरार हआ है, प्यार से फिर क्यूँ डरता है दिल' इसके अंतरे को एक पंक्ति - 'रात दसों दिशाओं से कहगी अपनी कहानियाँ ' पर संगीतकार जयकिशन का कहना था कि दशक चार दिशाएँ(पूव,पश्चिम, उत्तर, दक्षिण) तो जानते-समझते ह, दस दिशाएँ नहीं ।इसलिए उन्होंने शैलद्र द्वारा लिखी गई इस पंक्ति पर आपत्ति को थी ।

प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों म)लिखिए –
प्र1.राजकपूर द्वारा फ़िल्म को असफलता के खतरों से आगाह करने पर भी शैलद्र ने यह

फ़िल्म क्यों बनाई ?

उ1. राजकपूर ने 'तीसरी कसम' फ़िल्म को कहानी और संवेदना देखकर शैलद्र को चेतावनी दे दी थी कि यह फ़िल्म असफल हो सकती है। इसे खरीददार नहीं मिलगे। परंतु शैलद्र भावुक-हृदय कवि थे। उनम आदशवाद बहुत प्रबल था। वे यश और धन लिप्सा से दूर थे। वे इस फ़िल्म का निमाण अपने मन को संतुष्टि के लिए करना चाहते थे। इसलिए उन्होंने खतरा उठाकर भी यह फ़िल्म बनाई।

प्र2.'तीसरी कसम 'म राजकपूर का महिमामय व्यक्तित्व किस तरह हीरामन को आत्मा म उतर गया है ? स्पष्ट कीजिए।

उ2.'तीसरी कसम ' फ़िल्म का नायक –हीरामन खालिस(pure)ग्रामीण,अनपढ़,डरपोक व्यक्ति था ,जो केवल प्यार को भाषा जानता और समझता था। उसम करुणा, सादगी और भोलापन था। राजकपूर ने अभिनय म यही सब साकार कर दिखाया। फ़िल्म को देखकर कहीं भी यह अहसास नहीं होता कि दशक एक महान नायक को एक मामूली-से रोल म देख रहा है। दशक को राजकपूर, राजकपूर नहीं लगते, अपने सशक्त अभिनय के कारण वे हीरामन ही लगते ह।

प्र3.लेखक ने ऐसा क्यों लिखा है कि 'तीसरी कसम 'ने साहित्य-रचना के साथ शत-प्रतिशत न्याय किया है ?

उ3.अधिकांश फ़िल्म किसी साहित्यिक रचना को फ़िल्मी लटकों-झटकों और तौर-तरीकों के अनुरूप ढाल देती है।परिणामस्वरूप वह साहित्यिक रचना अपने मूल रूप से बहुत दूर हो जाती है।साहित्य का स्तर भी गिर जाता है। परंतु'तीसरी कसम 'म यह दोष नहीं आ पाया। गीतकार शैलद्र ने कुशलतापूवक(skillfully) साहित्यिक गहराई और यथाथ (reality) को ज्यों का त्यों(as it is) बनाए रखा।इस फ़िल्म के सब दृश्य(scene)गहरे भावपूण ह। इसलिए किसी ने इस फ़िल्म को सैल्यूलाइट पर लिखित कविता कहा है।

प्र4.शैलद्र के गीतों को क्या विशेषताएँ ह ? अपने शब्दों म लिखिए।

उ4.शैलद्र के गीत बहुत भावपूण होते ह। वे संवेदनापूण(sensitive)होते हुए भी कठिन नहीं होते। उनको सरलता(simplicity), शांत नदी को तरह गतिशीलता और समुद्र को तरह गहराई सबको प्रभावित करती है। वे अपने गीतों को केवल लोकप्रिय ही नहीं बनाते, बल्कि श्रोताओं(listeners) संस्कार भी देते ह।उनके गीतों म करुणा रची-बसी होती है। फिर भी वह पराजित नहीं करती।उनको करुणा कुछ करने के लिए उत्साहित करती है।

प्र5.फ़िल्म निमाता के रूप म शैलद्र को विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उ5.शैलद्र आम मुंबइया निमाताओं को तरह केवल मुनाफ़ा कमाने के लिए फ़िल्म निमाण करनेवाले निमाता नहीं थे।वे फ़िल्मी चकाचौंध म रहते हुए भी धन और यश-लिप्सा (fame) से दूर बने रहे। उन्होंने फ़िल्मों को गहरा साहित्यिक बनाने का प्रयत्न किया। उन्होंने फ़िल्म म सस्तापन(cheap) या उथलापन लाने को बजाय दशकों को संस्कारित करने का प्रयास किया।उनको फ़िल्म कविता जैसी सघन,गहन और प्रभावी थीं। तभी उनको कला-फ़िल्म को अनेक पुरस्कार मिले।

प्र6.शैलद्र के निजी जीवन को छाप उनको फ़िल्म म झलकती है – कैसे ? स्पष्ट कीजिए।

उ6.शैलद्र अपने जीवन म बहुत गहरे, उदार, शांत और कवि-हृदय व्यक्ति थे। वे साहित्यिक गहराई से कोई समझौता करने को तैयार नहीं थे। उन्ह यश और धन को भूख नहीं

थी। वे आत्म-संतोष चाहते थे।उनके यही गुण उनकी फ़िल्मों म भी प्रकट हुए।
उन्होंने लटकों-झटकों वाली मसाला फ़िल्म नहीं बनाई। उन्होंने साहित्यिक रस और स्वाद को फ़िल्म म ज्यों का त्यों उतार दिया। परिणामस्वरूप वह गहरी कलात्मक फ़िल्म बन गई। परंतु उसे खरीदने वाले वितरक नहीं मिले।

प्र7.लेखक के इस कथन से कि 'तीसरी कसम' फ़िल्म कोई सच्चा कवि हृदय ही बना सकता था, आप कहाँ तक सहमत ह ? स्पष्ट कीजिए।

उ7.लेखक का यह कथन सवथा सत्य है। म इससे पूरी तरह सहमत हूँ।'तीसरी कसम फ़िल्म'पूणत: ग्रामीण परिवेश, वहाँ की भाषा एवं रीति-रिवाज़ों पर आधारित है।ऐसे परिवेश और वातावरण पर वही मोहित हो सकता है जिसका हृदय संवेदनशील हो। ऐसे निमाता की लोक जीवन म आस्था और लोक रुचि पर विश्वास रखना आवश्यक है। यह काम कोई सच्चा कवि-हृदय ही कर सकता है। उसे अपनी सच्चाई के साथ-साथ दूसरों के सत्य पर भी उतना ही भरोसा होता है।